as National Waterways with immediate effect and that they are properly maintained, as assured in the past. Thank you, Madam.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, Mr. Shiv Kumar Mishra. Not here. Yes, Mr. Khaleelur Rahman.

Need to create a separate Ministry to look after the affairs of Minorities

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान (आन्ध्र प्रदेश) : मोहतरमा डिप्टी चैयरमैन साहिब, जैसा कि सब अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दुस्तान एक अजीम जम्हूरी मुल्क है और इस मुल्क में यह काबिले लिहाज तादाद में करोड़ों की तादाद में अकलियतें रहती हैं और बसती हैं और अकलियतों का इतमीनान हमारे मुल्क की रूह है। जम्हूरियत उसी वक्त कायम हो सकती है, जबकि इस मुल्क की अकलियतें इतमीनान से अपनी जिंदगी यहां पर बसर करें।

हिन्दुस्तान को आजाद हुए कोई 40 साल हो चुके हैं और इस अरसे में अकलियतों के भी मसायल में दिन ब दिन इजाफा होते रहे हैं। जहां तक मजहबी अकलियतों का सवाल है, मुसलमान, ईसाई, सिख, पारसी और जैन ये सब मिल करके यहां अकलियतें कहलाई जाती हैं। इस लिहाज से इनमें तकरीबन 80 फीसदी मुस्लिम अकलियात हैं। जरूरत इस बात की है कि इनके मसायल की मुनासिब और मौजू तरीके से देखभाल की जाय। मर्कजी हुकूमत और रियासती हुकूमतें अकलियतों के फलाह व बहबूद के लिए मुक्तलिफ एलानात करती है और प्रोग्राम बनाती है। चुनाचे हमने यह देखा कि वजीरे-आजम की जानिब से भी अकलियतों के वेलफेयर के लिए 15 नुकाती प्रोग्राम बनाए गए। मगर मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि जिस तरीके से इस प्रोग्राम का ईम्प्ली-मेंटेशन होना चाहिए, उस तरीके से प्रोग्राम का इंम्प्लीमेंटेशन नहीं हुआ। इसकी वजह क्या है? इसकी सिर्फ एक ही वजह यह मालूम होती है कि प्रोपर कंसनट्रेशन और प्रोपर फोलो-अप न होने की वजह से इस प्रोग्राम में मुनासिब इंपर्लीमैंटेशन नहीं हो रहा है।

इसके अलावा हम यह देख रहे हैं कि मुस्लिम के जो औकाफी मसायल हैं, हज के मसायल हैं, उनकी तालीमी मसायल है, मआशी मसायल हैं, इन सब के लिए मैं हुकूमत ए-हिंद से यह अपील करता हूं कि एक अलहदा मिनिस्टरी बनाई जाय और यह मिनिस्टरी तमाम माइनोरिटीज के जितने भी अफेयर्स हैं, उन सब की देखभाल करे, तभी मैं समझता हूं कि यह मसायल जो है, हल हो सकते हैं।

हम यह देखते हैं कि जहां तक औकाफी जायदाद का सवाल है, हमारे मुल्क में करोड़ों और अरबों की मालीयत औकाफी जायदाद है, मगर इन्तिहाई अफसोस की बात है कि उसकी प्रोपर निगरानी न होने की वजह से उससे खातिरख्वाह फायदा नहीं उठाया जा रहा है बल्कि जरूरत इस बात की है कि वक्फ डवलपमेंटल कारपोरेशन कायम किया जाय और इससे जो आमदनी हो सकती है. . वह मुसलमानों की फलाहो बेहबूद के लिए, उनकी तालिमी मसाइल, मआशी मसाइल को हल करने के लिए, इस्तेमाल कर सकते हैं। चुनाचे हज के मसाइल के ताल्लुक से भी हमने देखा कि पिछले वर्ष ही इसमें मुख्तलिफ किस्म की इरेगुल-रिटीज हुई है जरूरत इस बात की है कि हज के उमूर हैं, औकाफी मसाइल हैं. तालिमी मसाइल हैं—इन सब मसाइल्स की देखभाल के लिए हमारी मरकजी हुकूमत के लेवल पर एक अलहदा मिनिस्ट्री बनायी जाय और वह मिनिस्ट्री एक कैबेनेट वजीर के जिम्मे की जाय। साथ ही उसकी एक मुकतदिर हैसियत हो ताकि वह सही तरीके से उसकी देखभाल करे। वह भी उसी शख्स को दी जाए जो कि इन मसाइल्स से वाकिफ हो और इन मसाइल्स में दिलचस्पी रखता हो।

चुनाचे मैं इस स्पेशल मेंशन के जरिए आपकी इस हुकूमते हिंद से दरख्वास्त करूंगा कि वह हमदर्दाना गौर करते हुए अकलियतों की तमाम मसाल्स की देखभाल के लिए एक अलहदा और इंडपेन्डेंट मिनिस्ट्री कायम करे। शुक्रिया।

[شری محمد خلیل الرحمان (آندھرا پردیش): محترم چیئرمین صاحب - جیسا کہ سب اچھی طرح جانتے ہیں ہندوستان ایک جمہوری ملک ہے اور اس جگہ قابل لحاظ تعداد میں اقلیتیں رہتی ہیں۔ اور ان اقلیتوں کا اطمینان ہمارے ملک کی روح جمہوریت اس وقت قائم ہو سکتی ہے۔ جبکہ ان کی اقلیتیں اطمینان سے اپنی زندگی یہاں بسر کریں۔ ہندوستان کو آزاد ہوئے کوئی ۴۰ سال ہو چکے ہیں اس عرصہ میں اقلیتوں کے مسائل میں ہر دن اضافہ ہوتا رہا ہے۔ جہاں تک کہ مذہبی اقلیتوں کا سوال ہے - مسلمان عیسائی سکھ پارسی اور یہ سب مذکورہ یہاں کی اقلیتیں کہلاتی ہیں۔ اس میں سے انہیں تقریباً ۸۰ فیصد مسلم اقلیت ہے۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ان کے مسائل کی مناسب اور موزوں طریقے سے دیکھ بھال کی جائے۔ مرکزی حکومت اور ریاستی حکومتیں اقلیتوں کی فلاح و بہبود کیلئے مختلف اعلانات کرتی ہیں اور پروگرام بناتی ہیں۔ چنانچہ ہم نے یہ دیکھا ہے کہ وزیر اعظم کی جانب سے بھی اقلیتوں کے ویلفیئر کے لئے ۱۵ نکاتی پروگرام بنائے گئے۔ مگر مجھے افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ جس طریقہ سے اس پروگرام کا ایڈمنسٹریشن ہونا چاہئے تھا اس طریقے سے پروگرام کا امپلیمنٹیشن نہیں ہوا۔ اس کی وجہ کیا ہے۔ اس کی صرف ایک ہی وجہ معلوم ہوتی ہے کہ پروپر ایڈمنسٹریشن اور پروپر مانیٹرنگ نہ ہونے کی وجہ سے اس پروگرام کا مناسب امپلیمنٹیشن نہیں ہو رہا ہے۔

اس کے علاوہ ہم یہ دیکھ رہے ہیں کہ جتنا جو اوقافی مسائل ہیں۔ حج کے مسائل ہیں ایسے تعلیمی مسائل ہیں - معاشی مسائل ہیں۔ ان سب کے لئے حکومت ہند سے یہ اپیل کرتا ہوں کہ ایک علیحدہ منسٹری بنائی جائے اور یہ منسٹری تمام مائنارٹیز کے جتنے بھی افیئرس ہیں ان سب کی دیکھ بھال کرے۔ تبھی میں سمجھتا ہوں کہ یہ مسائل صحیح حل ہو سکتے ہیں۔

ہم یہ دیکھتے ہیں کہ جہاں تک اوقافی جائیداد کا سوال ہے ہمارے ملک میں کروڑوں اربوں کی مسلم اقلیت کی اوقافی جائیداد ہے۔ مگر انتہائی افسوس کی بات ہے کہ اس کی پروپر نگرانی نہ ہونے کی وجہ سے اس سے خاطر خواہ فائدہ نہیں ہو رہا ہے۔ بلکہ ضرورت اس بات کی ہے کہ وقف ڈیولپمنٹ کارپوریشن قائم کیا جائے۔ اور اس سے جو آمدنی ہوگی۔ وہ مسلمانوں کی فلاح و بہبود کیلئے - ان کے تعلیمی مسائل - معاشی مسائل کو حل کرنے کیلئے استعمال کر سکتے ہیں۔

چنانچہ حج کے مسائل کے تعلق سے بھی ہم نے دیکھا ہے کہ پچھلے سال بھی اس میں مختلف قسم کی اریگولیریٹیز ہوئی ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ حج کے اور ہمارے اوقافی مسائل ہیں۔ تعلیمی مسائل ہیں۔ ان سب مسائل کی دیکھ بھال کیلئے ہماری مرکزی حکومت کے لیول پر ایک ایک علیحدہ منسٹری بنائی جائے۔ اور وہ منسٹری ایک کیبنٹ وزیر کے ذمہ کی جائے۔ ساتھ ہی اس کی ایک مستقل حیثیت ہو تاکہ صحیح طریقے سے اس کی دیکھ بھال کی جا سکے اور ایک ایسے وزیر کو دی جائے جو کہ ان مسائل سے واقف ہو۔ اور ان مسائل میں دلچسپی رکھتا ہو۔

چنانچہ میں اس اسپیشل مینشن کے ذریعے آپ کی معرفت حکومت ہند سے درخواست کروں گا کہ وہ ہمدردانہ غور کرتے ہوئے اقلیتوں کے تمام مسائل کی دیکھ بھال کیلئے ایک علیحدہ انڈیپنڈنٹ منسٹری قائم کرے۔]

डा० अबरार अहमद खान (राजस्थान) : माननीय डिप्टी चेयरमैन साहिबा मैं इस स्पेशल मेंशन का समर्थन करता हूं । ...(व्यवधान)... ये अकलियतों के हित की बात चाहते हैं । उन्होंने इसके लिए 15 नुकाती प्रोग्राम दिया है ।लेकिन मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि ब्यूरोक्रेसी और राज्य सरकारें उस का इम्पलीमेंटेशन नहीं कर रही हैं । यहां कल्याण मंत्रालय से जब जानकारी ली जाती है तो वह कुछ आंकड़े जरूर दे देता है, लेकिन मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहूंगा कि इस 15 सूत्रीय कार्यक्रम का राज्य सरकारों से अमल कराया जाय। हज की जो प्राब्लम है, वक्फ की जो प्रोब्लम है--उनका समाधान किया जाऐ। राजस्थान में भी दो साल से बिना वक्फ बोर्ड के काम चल रहा है और वह जायदादें खुर्दबुर्द हो रही हैं । लिहाजा वहां भी वक्फ बोर्ड का गठन किया जाए। धन्यवाद ।

कुमारी सईदा खातून (मध्य प्रदेश) : महोदया, मैं भी इस स्पेशल मेंशन का समर्थन करती हूं ।

श्री अब्दुल समद सिद्दीकी (कर्णाटक) : मैडम डिप्टी चेयरमैन, मैं इस स्पेशल मेंशन के साथ खुद को एसोसिएट करता हूं । मैं आपके जरिए यह बताना चाहूंगा कि वक्फ बोर्ड का जो एमेंडमेंट किया गया था, लेकिन प्रसिडेंट का अमर न होने के बाद गालिबन उलमाओं की मुदाखलत से हुकूमत के उसको रोक दिया था । वह एमेंडमेंट अभी तक हाउस के अंदर नहीं आया है । मेरी दरख्वास्त है कि कोशिश की जाये कि जल्द से जल्द वह एमेंडमेंट लाया जाये।

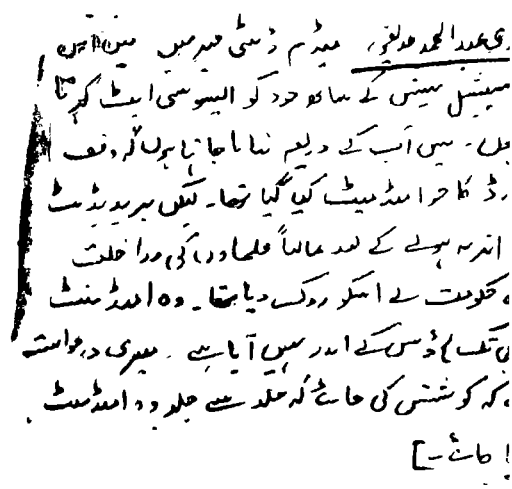

Computer Virus in Delhi University

SHRI KAPIL VERMA (Uttar Pradesh): Madam, I am thankful to you for permitting me to raise a very important question which as a scientits you will appreciate, and I hope you will ask the Government to take immediate measures about it.

Madam, the computer virus which has created a scare in the United States and certain other countries has now hit Delhi, Vijayawada, Vishakhapatnam and some other centres in India. This is causing a great concern among the people, particularly among the academic and scientific community.

The Computer in the Department of Physics and Astro Physics of the Centre of Science Education in Delhi University has been hit by virus 'Ashar' which gobbles up valuable space in the floppy disks, destroys stored files and sends wrong messages. Students have been complaining of these abnormal happenings for the last one month.